बहुजन दर्शन

सुनील सहस्रबुद्धे

बहुजन, लोकविद्या, सामान्य जीवन, पंचायत, स्वराज, कला (नैतिकता) के आपसी सम्बन्ध बहुजन दर्शन में प्रवेश का एक मार्ग प्रशस्त करते हैं. इस दिशा में नीचे के वाक्य मदद कर सकते हैं.

1. बहुजन का ज्ञान लोकविद्या है. लोकविद्या बहुजन समाज में बसती है.

2. बहुजन का जीवन सामान्य जीवन है. सामान्य जीवन का दिशा बोध बहुजन समाज के मूल्यों से प्राप्त होता है.

3. बहुजन का संवाद और निर्णय का स्थान पंचायत है. पंचायत का सर्वानुमति का तरीका बहुजन समाज में निर्णय के तरीके का आदर्श है.

4. बहुजन का शासन – प्रशासन का आदर्श स्वराज है. स्वराज बहुजन की आध्यात्मिक और लौकिक रचना है.

5. बहुजन की सारी गतिविधियाँ कला/भाव गर्भित होती हैं. भाव प्रधान तर्क बहुजन के तर्क का रूप है.

6. लोकविद्या सामान्य जीवन का मार्ग दर्शक ज्ञान है. सामान्य जीवन लोकविद्या का घर है.

7. लोकविद्या अपने नीति/भाव प्रधान स्वभाव के चलते पंचायत का ज्ञान आधार बनती है: पंचायत लोकविद्या को श्रेष्ठ ज्ञान का स्थान देती है.

8. लोकविद्या में स्वराज का ज्ञान आधार होता है. स्वराज लोकविद्या का स्थूल रूप है.

9. लोकविद्या कला/भाव सापेक्ष होती है तथा इसमें तर्क भाव-प्रधान होता है. (लोक)कला लोकविद्या का ही रूप है.

10. सामान्य जीवन में पंचायत की सहज स्वीकृति है. पंचायत सामान्य जीवन का ही अंग है.

11. सामान्य जीवन में हर सामाजिक इकाई की स्वायत्तता स्वराज को सामाजिक आधार देती है. स्वराज में सामान्य जीवन अपनी विसंगतियां स्वयं हल करता है.

12. सामान्य जीवन की हर गतिविधि भाव पूर्ण और नीति सापेक्ष होती है. कला सामान्य जीवन के हर अवयव में व्याप्त होती है.

13. पंचायत स्वराज में निहित स्वायत्तता और सामूहिकता को रेखांकित करती है. स्वराज में नियम संयम के पालन का दारोमदार पंचायत पर होता है.

14. पंचायत एक नैतिक बल का रूप है. नैतिक सामाजिक निर्णयों का स्थान ही पंचायत है.

15. स्वराज वह सोच और व्यवस्था है जिसमें हर घटना या क्रिया नीति सापेक्ष होती है. कला का स्थान जब ज्ञान की दुनिया में सर्वोच्च होता है, स्वराज एक प्राकृतिक अवस्था के रूप में पहचाना जाता है.